पापी

संजीव

इस्माइलपुर कभी गए हैं? नहीं? तो एक बार हो आइए न! अरे, वही! सोनीपत के बस पड़ाव से आगे जो तिराहा पड़ता है उसी के दाहिने वाली सड़क पर तीन किलोमीटर अन्दर तो है इस्माइलपुर। इस्माइलपुर जाएँ तो रामलुभाया से ज़रूर मिलें। कोई भी बता देगा कि वो रहे रामलुभायाजी।

यह आदरसूचक "जी" रामलुभाया के नाम से इधर पिछले पाँच सालों से जुड़ा है। पहले तो वह सिर्फ "लुभाया" था। एक मनहूस आदमी। मनहूस भी कोई ऐसा वैसा नहीं...। उसके बारे में आम राय थी कि वो देख भर ले तो उस पेड़ में फल न लगें, भरा घड़ा फूट जाए, गाय-भैंस का दूध सूख जाए। ऐसी बुरी नज़र थी रामलुभाया की। गाँव के लोगों के रुख में रामलुभाया के प्रति यह बदलाव कैसे आया, इसे जानने के लिए पाँच साल पीछे लौटना पड़ेगा।

इस्माइलपुर के जगत शर्मा के घर चोरी हुई। साइकिल, घड़ी, गहने और पता नहीं क्या-क्या तो चुरा ले गया चोर। शर्मा जी ने रट पकड़ ली, "हम तो बर्बाद हो गए।"

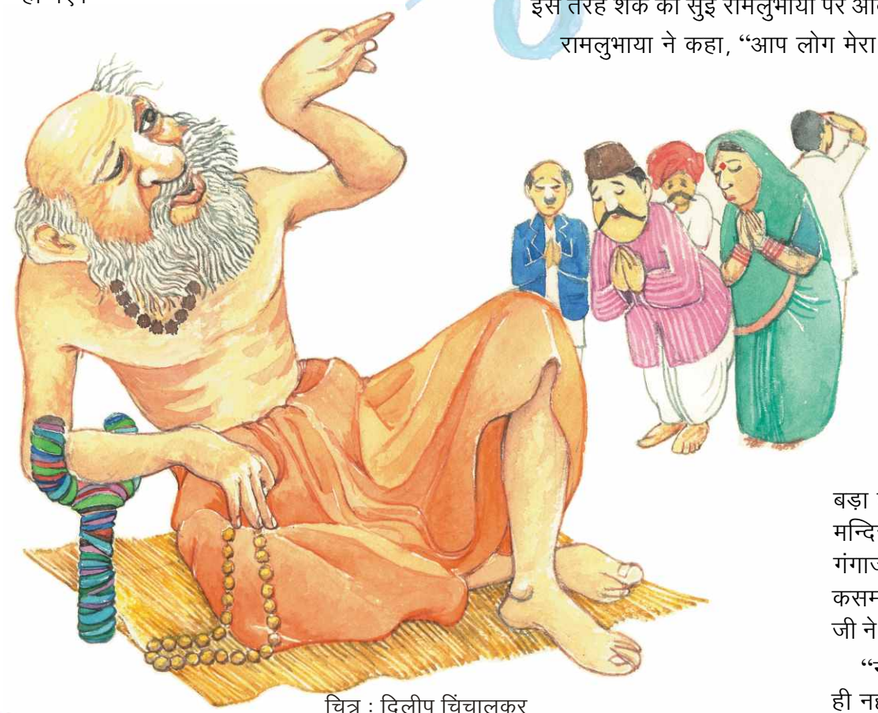

चित्र : दिलीप चिंचालकर

"लेकिन यह करतूत है किस शैतान की?" लोगों ने पूछा

"क्या पता?"

"आपको किसी पर शक है?"

"बिना साखी-साबूत के किस पर उँगली उठाऊँ?"

चोर का पता लगाने के लिए गाँव के लोगों ने उन्हें आचार्य जी के पास जाने की सलाह दी। आचार्य जी के दो-दो आश्रम हैं – एक काशी में, दूसरा हरिद्वार में। जिसे बड़ा से बड़ा सी.आई.डी. पता नहीं लगा सकता उसे आचार्य जी पलक झपकते ही बता देते हैं।

आचार्य जी ने आँखें मूँदीं। कुछ मंत्र बुदबुदाए फिर कहा, "उसका नाम 'र' से शुरू होता है और 'य' पर खत्म होता है।"

रोहतक से आए गुनी भेदिया ने विचार करके एक और बात बताई, "उसका घर गाँव के दक्षिण में है।"

"लेकिन गाँव के दक्षिण में तो बहुतों के घर हैं। कुछ और सूत्र बताइए।"

"उसके परिवार में छह सदस्य हैं।"

गाँव के दक्षिण में मकान, "र" से शुरू और "य" पर खत्म होता नाम! घर का गाँव के दक्षिण में होना...

सारे सूत्र रामलुभाया से मिलते थे सिवा इसके कि उसके परिवार में मिया-बीबी, उनका बेटा दीपक कुल तीन प्राणी मात्र थे जबकि होने चाहिए थे छह। रामलुभाया की एक गाय, एक भैंस, भैंस की पड़िया – इन्हें मिलाकर परिवार के सदस्यों की संख्या छह मान ली गई। गाँव वालों की नज़रों में वह पहले से मनहूस था ही इस तरह शक की सुई रामलुभाया पर आकर टिक गई।

रामलुभाया ने कहा, "आप लोग मेरा यकीन मानिए, मैंने चोरी नहीं की है।"

"फिर आचार्य जी और ओझा, गुनी, भेदिया सब एक स्वर से तुम्हारा ही नाम क्यों ले रहे हैं?" शर्मा जी ने पूछा।

"वो मैं कैसे बताऊँ? लेकिन मैं निर्दोष हूँ।"

"ऐसे नहीं।"

"फिर कैसे?"

"भगवान के दरबार से बड़ा कोई दरबार नहीं है। तुम मन्दिर में चलकर गीता-गंगाजल पर हाथ रखकर कसम खाकर कहो।" पण्डित जी ने कहा।

"नहीं, सिर्फ गीता-गंगाजल ही नहीं, अपने इकलौते बेटे के ही नहीं, अपने इकलौते बेटे के सिर पर भी हाथ रखकर कसम खानी पड़ेगी।"

"चलिए, खा लेता हूँ कसम।"

इस तरह पूरे इस्माइलपुर के सामने रामलुभाया ने गीता, गंगाजल और अपने बेटे दीपक के सिर पर हाथ रखकर कसम खाई कि उसने चोरी नहीं की है और वह निर्दोष है।

उस दिन बात आई गई हो गई। लेकिन सवाल था, अगर रामलुभाया ने चोरी नहीं की तो फिर किसने की है। गाँव में चाय वाले त्यागी जी, साइकिल का पंचर बनाने वाले ईशान अली, सोनीपत से सामान लाकर बेचने वाले करतार सिंह, भूतेन्दर सिंह, शर्मा, चौधरी, चौटाला गाँव के एक-एक आदमी को खँगाला गया पर शक की सुई अभी भी रामलुभाया पर ही जाकर अटकती। लाख कसमें खाए, मनहूस तो है ही।

यह सब अभी चल ही रहा था कि साल बीतते न बीतते एक ऐसी घटना घट गई कि रामलुभाया पर लगाया गया आरोप पुख्ता हो गया। हुआ क्या कि रामलुभाया की भैंस एक दिन गाँव के तालाब में भागी। और उसे हाँककर लौटाने गया दीपक तालाब में डूब गया।

खबर आग की तरह फैल गई। पूरा गाँव इकट्ठा हुआ लेकिन रामलुभाया के पक्ष में नहीं, उसके तिरस्कार के लिए। रामलुभाया खुद ही पानी में घुसकर अपने बेटे को किनारे ले आया। अगर सही समय पर लोगों ने मदद की होती तो शायद वह बच भी जाता। लेकिन अब तो काफी देर हो चुकी थी। रामलुभाया के प्रति सहानुभूति जताना तो दूर की बात लोग उसे

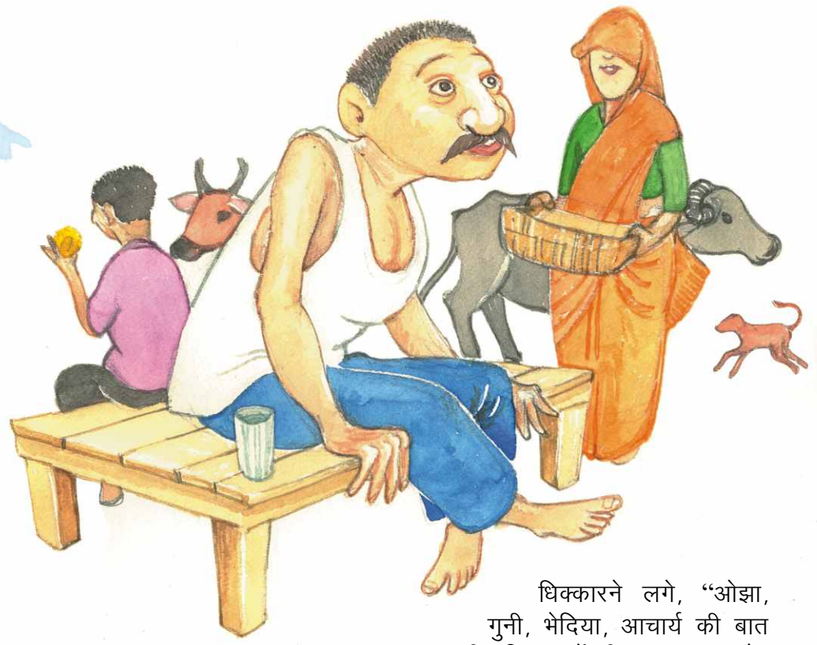

धिक्कारने लगे, "ओझा, गुनी, भेदिया, आचार्य की बात झूठ न थी। फिर तुम्हें गीता गंगाजल और बेटे के सिर पर हाथ रखकर कसम खाने की क्या ज़रूरत थी रामलुभाया? भगवान ने न्याय कर दिया ना। अरे सब की अदालत से छूट जाओ, उसकी अदालत से कैसे छूट पाओगे? तुम चोर ही नहीं बेटे के हत्यारे भी हो।"

रामलुभाया का पूरे गाँव ने बहिष्कार कर दिया। दिन बीतते रहे। उदास और कलंकित दिन। रामलुभाया के दुखों का कोई अन्त न था? उसके लिए गाँव का हर दरवाज़ा बन्द था। बन्द थे – मन्दिर, चौपाल, खलिहान भी। वे अपना दर्द किससे बाँटता।

"इस गाँव की कैद में रहकर कलंकित जीवन का अभिशाप ढोने से अच्छा होता हम भी तालाब में डूब मरते।" रामलुभाया ने कहा, "चलो, कहीं और चलते हैं। क्या बचा है हमारा यहाँ?" पत्नी दूलो ने कहा। दूसरे दिन पति-पत्नी ने अपना थोड़ा-सा सामान बाँधा और गाय, भैंस, पड़िया लेकर निकल पड़े। मन्दिर पर आकर एक बार पीछे मुड़कर देखा। काफी लोग उन्हें देख रहे थे। रामलुभाया को अभी भी उम्मीद थी कि कोई तो टोकेगा, "कहाँ जा रहे हो रामलुभाया?" लेकिन न, कोई नहीं।

पति-पत्नी का गला भर आया। आँखें नम हो आईं। उन्होंने मन्दिर पर मत्था टेका। गाँव की माटी को सिर से लगाया और अपने मवेशियों के साथ चल पड़े।

गाँव से दो किलोमीटर दूर रिश्ते के फुफेरे भाई के यहाँ जाकर रुके। और सोचने लगे कि अब आगे क्या करना चाहिए। गाँव छोड़े हुए यह पाँचवाँ दिन था। गाँव के लोग, पेड़-पल्लव, मवेशी, तालाब और सबसे बढ़कर अपना सूना घर उन्हें बेतरह याद आते।

परेशान रामलुभाया ने आगे क्या किया होगा? क्या वह वापिस गाँव लौट गया होगा?

इस कहानी का शेष भाग तुम अगले अंक में पढ़ोगे। क्या तुम इस कहानी को पूरा करना चाहोगे?

हमें तुम्हारे जवाबों का इन्तज़ार रहेगा। कहानी के चुनिन्दा अन्त चकमक के अगले में प्रकाशित किए जाएँगे। और उनके लेखकों को मिलेगी एक बहुत ही मज़ेदार किताब। तो, रचनाएँ हमें 20 मई तक मिल जानी चाहिए!